धर्मप्रेमी परिवार का राष्ट्रीय मासिक मुख-पत्र

धर्मप्रेमी संदेश

चाह धर्म की - राह प्रेम की

वर्ष : 2 अंक : 2
पृष्ठ सं. 44
जनवरी, 2021

धर्मप्रेमी परिवार

मंगल (?)

वैक्सीन मिशन

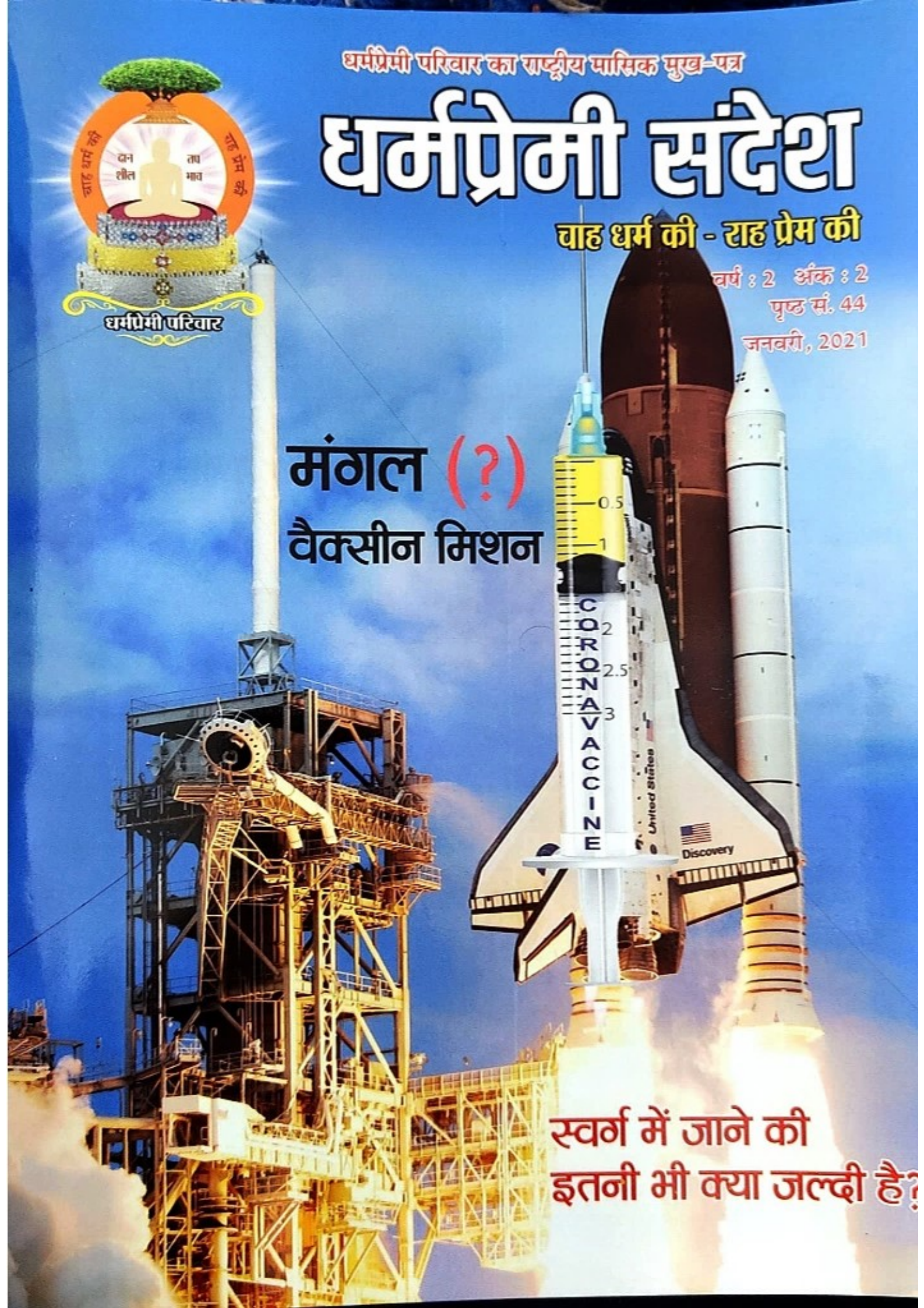

स्वर्ग में जाने की इतनी भी क्या जल्दी है?

मंगल (?) वैक्सीन मिशन भाग–1

चिकित्सा : रोग से भी भयानक ???

The Treatment : Dangerous than Disease

ले. राजेश आर्य

[यह लेख किसी राजेशजी आर्य ने लिखा हुआ है और अंग्रेजी भाषा में, डॉ. बिश्वरूप रॉय चौधरी की ऑनलाइन मैग्जीन बिश्वास में छपा है मगर सांप्रतकालीन वैक्सीन के बारे में सटीक जानकारी प्रदान कर रहा है, अत: हम इसका हिन्दी भाव रूपान्तरण करके यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

कोई भी प्रबुद्ध व्यक्ति इसे पढ़े बिना ना रहे, यह हमारी करबद्ध प्रार्थना है। इस लेख में लिखे सारे तथ्यों के सबूत हमने जुटा लिए है। संपादक - धर्मप्रेमी संदेश]

रमण : 'अरे! सुमन! तेरा घोड़ा जब बिमार पड़ा तब तुने कौनसी दवाई पिलाई थी?'

सुमन : 'रमण! मैंने दवाई तो नहीं मगर पेट्रोल पिला दिया था ..... अरे, सुन तो सही ..... रमण ..... ओ रमण ....!'

सुमन की बात सुनकर रमण तो भाग गया। दूसरे दिन रमण वापिस आकर चिल्लाने लगा,

'सुमन! मेरा घोड़ा तो मर गया, तेरे घाड़े का क्या हाल हुआ था?'

सुमन : 'मेरा भी मर गया था, मगर तूँ पूरी बात सुने तब ना .....'

आधी बात सुनकर भागने वाले रमण जैसे बेवकूफ ना बनना हो तो इस लेख में वैक्सीन के बारे में लिखी पूरी बात पढ़ने का जरूर कष्ट करें।

****

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, मीडिया और राजनेता की गठजोड़ से पैदा हुए एक वायरस ने लोगों को इतना ज्यादा डरा दिया है कि, वे किसी भी तरह से और किसी भी कीमत पर जल्द से जल्द एक समाधान चाहते हैं। वे नौकरी पर वापस लौटना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि सब कुछ जल्द से जल्द फिर से खोल दिया जाए।

बचपन से हम सुनते आये हैं कि, जिंदा रहना हो तो खुराक और औषधियाँ (हल्दी, सौंठ इत्यादि) आवश्यक होती है, मर जाना हो तो ज़हर लेना चाहिए, मगर वैक्सीन ना तो औषधि है, ना ही ज़हर .....

तो वैक्सीन क्या है? आगे देखते हैं .....

कुछ लोग ऐसा सोच रहे हैं कि केवल टीका ही हमें बचा सकता है।

मगर वे लोग, (जो पैसे उधार लेकर भी एक बार वैक्सीन लगवाने की सोच रहे हैं) वैक्सीन की असलियत यदि जान लेंगे तो काँप उठेंगे। शायद वैक्सीन ऐसा ज़हर नहीं है कि लगाने के तुरंत बाद ही सभी को मार दे मगर ऐसा जरूर कह सकते हैं कि, कोरोना की आने वाली वैक्सीन ज़हर से भी ज्यादा खतरनाक है।

8 सितम्बर - 2020

'कोई वैक्सीन अभी 50% भी असरदार नहीं'

■ नई दिल्ली : डब्ल्यूएचओ का कहना है कि हमारे मानदंडों के अनुसार क्लिनिकल ट्रायल के तीसरे चरण में पहुंची कोई भी वैक्सीन कोरोना वायरस के खिलाफ 50 फीसदी भी असरदार नहीं है। कई देश हैं, जो कोरोना वैक्सीन को लेकर आखिरी या तीसरे चरण का परीक्षण कर रहे हैं। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि साल 2021 तक लोगों को कोरोना वैक्सीन की खुराक मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। 2021 के मध्य तक भी व्यापक टीकाकरण नहीं हो सकेगा। डब्ल्यूएचओ प्रवक्ता के मुताबिक हम देखना चाहते हैं कि कोई भी वैक्सीन कोरोना वायरस के खिलाफ कितनी प्रभावी है। ▸▸ पेज 10

NBT

प्रश्न : मगर कोरोना को खत्म करने का दूसरा रास्ता भी तो नहीं है, वैक्सीन तो लेनी ही पड़ेगी ना?

उत्तर : बिल्कुल नहीं लेनी पड़ेगी क्योंकि कोरोना खत्म करने के अनेक विकल्प है। डॉ. बिश्वरूप रॉय जी जैसे अनेक कर्मठ विशेषज्ञ लोगों ने हजारों लोगों को अच्छा किया है और अभी भी कर रहे हैं। हमारी रिसर्च (संशोधन) में यह बात सामने आई है कि, कोरोना में 90 प्रतिशत लोग बिना दवाई स्वस्थ हो गये और 90 प्रतिशत मृत्यु ऐलोपैथी दवाई लेने के बाद हुई है, यहाँ पर दवाई खतरनाक माननी चाहिए या कोरोना? सबसे ज्यादा खतरनाक है आप का डर, अज्ञान और भ्रम .....।

वैक्सीन बनाने वाली कंपनियाँ खुद स्वीकार कर रही है कि हमारी वैक्सीन कोरोना मिटाने में 50 प्रतिशत ही कारगर हो सकती है।

प्रश्न : मगर 50 प्रतिशत तो सफल है ना?

उत्तर : इसकी गारण्टी भी वे लोग देने के लिए तैयार नहीं है।

जिस इलाज में फायदा शत-प्रतिशत संदेह के दायर में हो और नुकसान शत-प्रतिशत निश्चित हो वह इलाज का स्वीकार मूर्ख लोग ही करते हैं।

रेमदेसीविर, हाईड्रोक्सीक्लोरो-क्वीन इत्यादि अनेक दवाईयों के निष्फल परीक्षण के पश्चात् W.H.O. ने अब ट्रीटमेंट प्रोटोकॉल से उसे हटाने का एलान किया है।

जब कोरोना से मरने वाले 10,000 में से 1 भी नहीं हैं (डर पैदा करने में मीड़िया का रोल है) और इन दवाइयों के नाम से दिए गए ज़हर से हर 100 में से 12 की मृत्यु हो चुकी है।

प्रश्न : मगर मोदीजी खुद कह रहे हैं कि, कोरोना के लिए वैक्सीन ही कारगर उपाय है। क्या मोदीजी भी झूंठ बोल रहे हैं?

उत्तर : देश के प्रबुद्ध लोग राममंदिर निर्माण इत्यादि के द्वारा बहुसंख्यक जनता का विश्वास संपादन करने के कारण मोदीजी को हिन्दुत्व के पक्षधर के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। योगी आदित्यनाथ जैसे को कट्टर हिन्दुत्व के समर्थक के रूप में मान रहे हैं मगर, हिन्दुत्व समर्थक यह सरकार गौरक्षा हेतु गाय को राष्ट्रीय पशु के रूप में क्यों घोषित नहीं कर रही है, यह आश्चर्य की बात है!!!

गौभक्त सरकार आने के बाद भी हकीकत यह है कि, भारत के अनेक राज्यों में आज भी गाय अधिकृत रूप से कट रही है, अत: उन राज्यों के वोट पाने, वहाँ की सत्ता पाने की एक मजबूरी के चलते राजनैतिक लोग कभी भी देशव्यापी गौरक्षा नीति का निर्धारण शायद ही कर पायेंगे।

आपको जानकर बड़ी हैरानी होगी, गौभक्त भाजपा सरकार ही गौवध से निर्मित वैक्सीन लगवाने की भरपूर प्रेरणा दे रही है। फिटल बोवाइन सीरम, नामक पदार्थ तकरीबन हर वैक्सीन में आता है और इस (कोरोना) वैक्सीन में भी आयेगा, जो कि गर्भवती गायों को अवैध रूप से बूचड़खाने में काटकर उनके भ्रूणस्वरूप बछड़े में से निर्मित पदार्थ है।

वैक्सीन कंपनियों की वेबसाईट पर भी यह डाटा उपलब्ध है और टाईम्स ऑफ इन्डिया में भी यह स्वीकृत सच छापा गया है कि, गाय के शरीर में एन्टीबॉडीज़ ज्यादा बनते हैं। इसलिए वैक्सीन बनाने में गाय उपयुक्त हैं (यहाँ पर 'कटी हुई गाय' पढ़ना चाहिए)।

और आगे की बात बताऊँ तो, वैक्सीन में हर धर्म के अनुयायीयों के लिए आपत्तिजनक पदार्थ डाले जाते हैं। मुस्लीमों के लिए सूअर, हिन्दुओं के लिए गाय, क्रिश्चियन के लिए मनुष्य भ्रूण, जैनों के लिए किसी भी प्रकार के पंचेन्द्रिय प्राणी (बंदर-कुत्ते-घोड़े) से प्राप्त आपत्तिजनक पदार्थ, विगत कई

वर्षों से डाला जाता आया है।

हमें खोज है, एकाध मंगल पांडे की..... जो इस देशी अंग्रेजों के सामने बगावत कर सकें, मगर..... चुलबुल पांडे जैसे अनेक मिल जाते है, मंगल पांडे जैसा एक मिलना भी मुश्किल है।

यह वही मोदी सरकार है, जिन्होंने लोगों के आरोग्य की रक्षा के नाम से 2 महिने तक संपूर्ण देश को बेवजह के संपूर्ण लोकडाउन में झोंक दिया और जिन्होंने अर्थतंत्र की रक्षा के नाम से दो महिनों के बाद लोगों के आरोग्य से खिलवाड़ करने वाले शराब के ठेके सबसे पहले खोल दिए।

यदि प्रजा का स्वास्थ्य महत्त्व का था तो शराब के ठेके क्यों खोले? और यदि अर्थतंत्र ही महत्त्व का था तो लॉकडाउन क्यों डाला?

प्रश्न यह है कि, जमातीयों के कारण कोरोना फैलने की बात, क्या जानबूझकर फैलने दी थी? जमात के धर्मगुरु (सादिक) को आरोपी होते हुए भी क्यों नहीं पकड़ा गया? जमातियों के विरुद्ध एक भी सबूत ना मिलने से आखिर वह भी छूट गये तो असलियत में क्या कारण हो सकता है? हिन्दुओं को इस रोग से डरा कर, घर में बंद रखने का इससे अच्छा रास्ता क्या हो सकता है?

मैं कोई मोदी जी का आलोचक नहीं हूँ, मैं भी समझता हूँ कि, वैक्सीन लॉबी को समर्थन देना, उनकी कोई मजबूरी होगी, मगर वैक्सीन लेना हमारी मजबूरी कैसे हो सकती है?

प्रश्न : मगर, मोदी सरकार या अन्य राज्य सरकारें वैक्सीन मुफ्त में देने की बात कर रही है, क्या इसमें भी उनका कोई फायदा है? (वैक्सीन मुफ्त में देने में किसे लाभ हो सकता है?)

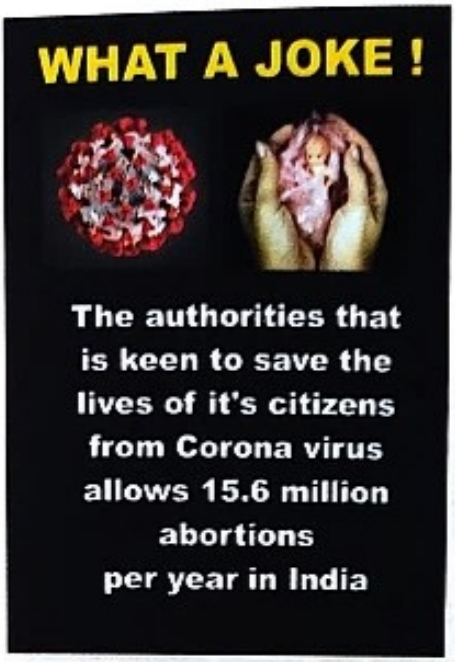

उत्तर : आज के कलयुगी जमाने में बूढ़े बाप को भी नि:स्वार्थ भाव से रोटी खिलाने वाले बेटे के दर्शन दुर्लभ है, तब पूर्ण रूप से प्रोफेशनल (धंधादारी) वैक्सीन कंपनियाँ, हम पर दया करने के लिए इतनी उत्सुक क्यों है?

कोल्ड्रिंक में नशे की दवाई डालकर मुफ्त में जवाँ लड़की को पीलाने वाला शुरूआत में बड़ा उपकारी ही लगता होगा..... क्योंकि, वह लड़की भोली-भाली है, उसे पता नहीं है कि, एक बार का यह मुफ्त का उपकार कितना महँगा पड़ेगा?

वैक्सीन एक बार लेने के बाद, उससे उत्पन्न अनेक नये-नये रोगों के लिए बार-बार नई-नई दवाईयाँ और वैक्सीन लेने की नोबत अपनी जिंदगी में ना लानी हो तो प्रथम बार में ही सचेत हो जाओ।

वो लड़की को नजर के सामने रखो जो भोलेपन में बदमाश लड़कों की गंदी चाल में फंसकर एक बार बलात्कार करने का मौका दे देती है, बाद में इस गलती के कारण बार-बार बलात्कार का फंदा तैयार हो जाता है।

मुझे लगता है कि, इस बारे में मुस्लिम कौम ज्यादा समझदार है, जो ऐसी वैक्सीन मुफ्त में भी लेना नहीं चाहती है और शायद इसी कारण से डीपोप्युलेशन अजेन्डा के समर्थकों की आँखों में वह कौम काँटें की तरह चुभ रही है।

कोई भी कंपनी वैक्सीन मुफ्त में

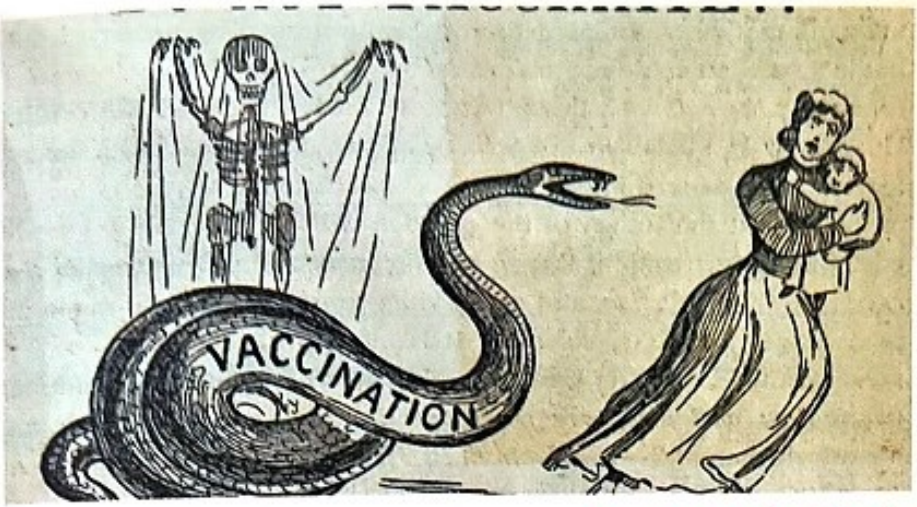

बनाती भी नहीं है, बना सकती भी नहीं है, देती भी नहीं है, दे भी नहीं सकती। गरीब की पत्नी को भुगतने के लिए सज्जन का मोहरा पहनकर बैठा गाँव का गुंडा नौकरी देकर उन गरीब पर उपकार करता दिखे तो भ्रमित नहीं होना चाहिए क्योंकि सीधा अत्याचार करने पर गाँव में विद्रोह खड़ा होने की संभावना होती है, अत: उपकार की आड़ में अन्याय किया जाता है।

मगर ..... वह अन्याय सामान्य बुद्धिवालों को जल्दी दिखता नहीं है। उन्हें तो सिर्फ उपकार ही दिखाई देता है।

खुद बिलगेट्स अपनी स्पीच में बोल चुका है कि हम वैक्सीन इत्यादि से दुनिया की जनसंख्या को दस से पंद्रह प्रतिशत कम कर देंगे। विश्व की वर्तमान आबादी 800 करोड़ में से 15 प्रतिशत कम करना यानी 100 करोड़ को निपटा देना। यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी गेम है। जो आगे के एपिसोड में हम समझायेंगे -

मुफ्त में वैक्सीन बाँटने वाली सरकारों के कुछ चुनिंदा प्रतिनिधियों की जेब भरी जाती है, जनता की जेब खाली करने के लिए .....

प्रश्न : इस वैक्सीन से और कोई नुकसान .....?

उत्तर : जो भी गरीब या श्रीमंत वैक्सीन लेते हैं उन्हें, अन्फर्टीलीटी (बांझपने) की समस्या का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी आने वाली पीढ़ी ही अदृश्य हो जाती है, उन्होंने अर्जित की हुई (श्रीमंत हो तो) संपत्ति या (गरीब हो तो) जमीं, इत्यादि संपदा पर सीधा-अधिकार बचे हुए लोगों का हो जाता है।

संपत्ति खत्म हो, उसका कोई मलाल नहीं है मगर यदि बच्चे पैदा होने की ही समस्या हो जाये तो भविष्य में धर्म के एवं राष्ट्र के अस्तित्व पर भी संकट खड़ा हो जायेगा।

इस बार की कोरोना वैक्सीन में तो आपकी आस्था ही खत्म हो जाये, ऐसे केमिकल्स डाले गये हैं। आपके शरीर का DNA चैन्ज हो जाये (यानी आप यदि पुरुष हो तो महिला में और महिला हो तो पुरुष में तब्दील हो जायेंगे यानि नपुंसक बना दे) ऐसी चीजे डाली गई है।

क्या हमें यह परिवर्तन स्वीकार्य है? यह बात सिर्फ मैं नहीं कहता हूँ, डॉ. रशीद बट्टर, डॉ. केनेडी, ॐकार मित्तल, डॉ. विश्वरूपरॉय चौधरी इत्यादि हजारों डॉक्टर्स कह रहे हैं।

भूतकाल में बांझपने की समस्या उतनी नहीं थी, जितनी आज है, आजकल वर्तमान पत्र में प्रथम पन्ने पर, पूरा पन्ना भरकर IVF ट्रीटमेंट (बच्चा पैदा ना होता हो तो कृत्रिम गर्भाधान से बच्चा पैदा करने की विधि) के विज्ञापन आने लगे हैं, क्यों? भूतकाल में दी गई वैक्सीन ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है।

और ..... आज भी जिन गरीबों ने किसी भी प्रकार की वैक्सीन नहीं लगवाई है, वहाँ पर यह समस्या बिल्कुल भी नहीं है। आपकी फर्टीलीटी और इम्युनीटी तोड़ने वाले कई पदार्थ वैक्सीन में डाले जाने हैं।

* हकीकत में जिसे एक बार कोरोना हो चुका है, उन्हें वैक्सीन लेने की आवश्यकता ही नहीं है, (क्योंकि एण्टीबॉडीज़ बन गये) फिर भी सभी को वैक्सीन लगवाने की घोषणा क्यों की जाती है? यह बात समझ से परे है, इतना ही नहीं, संदेह के दायरे में भी है।

* दूसरी महत्त्व की बात, दूसरी सारी वैक्सीन में मृत या कमजोर वायरस डाला जाता रहा है (ऐसा वे लोग

बताते है मगर इसमें भी वे लोग झूँठे है क्योंकि 4 अक्टूबर को ही दिल्ली की एक गली में कुछ स्वास्थ्य कर्मी पोलियो वैक्सीन लगाने आये थे, जिसके अंदर लाईव यानी जीवित वायरस और बंदर की कीड़नी के सेल डाले जाने की बात लिखी है।)

मगर ..... इस बार की (कोरोना वायरस की) वैक्सीन में कुछ ऐसे केमिकल्स डाले गये हैं कि, वह वैक्सीन आपके शरीर में घुसने के बाद नया कोरोना वायरस पैदा करेंगे, आपको बीमार करेंगे आपका DNA परिवर्तित करेंगे। यह जानकारी आधार भूत सूत्रों से प्राप्त हुई है।

वैक्सीन का भूतकालीन इतिहास वैसे भी सामान्य-असामान्य नुकसान की लंबी सूची से भरा पड़ा है। 1. गठिया, 2. चक्कर आना, 3. झटके लगना, 4. सीने में दर्द, 5. चेतना खोना, 6. दौरे पड़ना, 7. कपालतंत्रिका पक्षाघात, 8. मस्तिष्क की सूजन, 9. आँखों में दर्द, 10. ओटिज्म, 11. कैन्सर। मगर जो कोरोना की वैक्सीन है, वो इससे भी दो कदम आगे हैं 12. DNA परिवर्तन, 13. धर्म की आस्था में भंग, 14. फर्टीलीटी तोड़ना, 15. तड़प-तड़प कर मौत .....

हमने पहले ही कह दिया है कि, वैक्सीन जीवित रहने के लिए या मौत के लिए नहीं, बीमार बना कर आपको जिंदा रखने के लिए या तड़पा-तड़पा कर मारने के लिए बनाई गई है।

प्रश्न : आप ऐसा इल्जाम कैसे लगा सकते हो?

उत्तर : अमरीका इत्यादि राष्ट्रों में जैसे-जैसे वैक्सीन बढ़ती गई, वैसे-वैसे ओटिज्म और कैन्सर के मरीज़ भी बढ़ते गये हैं।

आश्चर्य की बात है कि जो माँ-बाप अपने बच्चों को टीके से दूर रख रहे हैं, उन्हें टीका लगाने वाली कंपनियाँ, जेल में क्यों डलवाना चाहती है? और खुद अपने उपर दायर होने वाले मुकदमों से क्यों बचना चाहती है?

सन् - 1986में, अमरीका में वैक्सीन कंपनियों के दबाव में एक कानून बनवाया गया था, 'चाइल्डहुड वैक्सीन इन्जुरी एक्ट'

इस कानून का मकसद यह था कि, यदि वैक्सीन लगाने के बाद आपके बच्चे को कोई भी नुकसान हो या आपका बच्चा मर जाये तो भी आप वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों पर केस नहीं कर सकते हो।

यदि आप वैक्सीन का विरोध करते हो तो वैक्सीन बनाने वाले आपको जेल में डलवाना चाहते हैं और यदि वैक्सीन से नुकसान होता है तो जेल की बात दूर, वह खुद अदालत में पेश नहीं होना चाहते हैं। यह कैसा दोगलापन है? यह कैसी दादागिरी है?

वैक्सीन मानव स्वास्थ्य के लिए भयानक नुकसानप्रद है, इसका और एक प्रमाण आपके सामने प्रस्तुत है (हमें पता है कि वैक्सीन में आने वाले मनुष्य भ्रूण-गाय या सूअर के अंग भी अब आपकी संवेदना जगाने में निष्फल है अत: आप के स्वास्थ्य की हानि की बात आपके सामने रखनी पड़ रही है।)

यदि कोई कंपनी खाद्य सामग्री में एल्युमिनियम के क्षार का उपयोग करता है तो उसका लाईसेन्स रद्द किया जाता है और उस पर केस किया जाता है, मगर वैक्सीन में एल्युमिनियम अवश्य डाला जाता है। शरीर में एल्युमिनियम जाने के कारण दिमाग के और ज्ञानतंत्र के रोग हो सकते हैं और एल्युमिनियम से भी ज़हरीली धातु मर्क्युरी (पारा) है, जिसे कहीं पर भी (खाद्य सामग्री में) डालने पर प्रतिबंध है, मगर ..... वैक्सीन में डाला जाता है। पारा में से बनने वाला थिमेरोसोल नामक कैमिकल वैक्सीन में प्रीज़र्वेटीव के रूप में डाला जाता है।

पारा, सीसा से 500 गुनी ज्यादा

जहरीली धातु है। वो छोटी सी मात्रा में हो तो भी दिमाग में जमा हो जाता है, निकलता नहीं है। पारे के (मर्क्युरी के) कारण बच्चों में ओटिज्म की बिमारी होती है, जिसके कारण बच्चे मंदबुद्धि के हो जाते है। पारा एक न्यूरोटोक्सिक रसायन है, फिर भी इसका उपयोग अभी भी क्यों किया जा रहा है?

सीधी सी बात है, वे लोग आप को हमेशा-हमेशा के लिए बीमार बनाये रखना चाहते हैं, ताकि उनके मार्केट में कभी भी मंदी ना आये।

बचपन से ही यदि अधिक से अधिक टीके लग जाये तो भविष्य की गुलामों की फौज उनके लिए तैयार हो जाएगी।

प्रश्न : क्या वैक्सीन से बचने का कोई रास्ता है?

1. ज्यादा से ज्यादा लोगों को वैक्सीन के दुष्परिणामों के बारे में जागृत करें, यदि जन आंदोलन हो गया तो जबरदस्ती वैक्सीन लगाने की मुहिम पर रोक लग जाएगी। अमरीका में भी पहले ट्रम्प ने वैक्सीनेशन के लिए आर्मी लगाने की बात की थी मगर, 50 प्रतिशत जितनी वहाँ की जनता वैक्सीन के विरोध में आ जाने से, मेन्डेटरी (अनिवार्य) करना नामुमकिन हो गया है।
2. 'My Body - My Right' मेरे शरीर में वैक्सीन लेना या नहीं लेना, मेरे अधिकार क्षेत्र की बात है, इसमें दुनिया की कोई सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती है, इस आधार पर सुप्रीम कोर्ट में सामूहिक रूप से जनहित याचिका (PIL) दायर कर सकते हैं।
3. अपने-अपने धर्म के अधिकार क्षेत्र में धर्म स्वातंत्र्य की बात रखकर अधिकार क्षेत्र का उपयोग करते हुए वैक्सीन लेने से इन्कार कर सकते हैं।
4. वे लोग यदि आप को बिना वैक्सीन बस-ट्रेन इत्यादि में सफर ना करने दे तो एक बार आप पैदल जाना, स्वीकार कर लेना मगर जीवित ही नहीं रहेंगे तो बस-ट्रेन क्या काम लगेगी? सरकार की दमनकारी, अन्यायकारी नीतियों के सामने झुक जाना भविष्य के लिए हानिकर है।
5. यदि जबरदस्ती वैक्सीन लगवाने के लिए आपको बाध्य किया जाये तो तर्क प्रस्तुत करें कि, यदि मैं वैक्सीन ना लू तो वैक्सीन लेने वाले को संक्रमण कैसे होगा? यदि वैक्सीन ना लेने के कारण मुझे प्रॉब्लम होगा तो वह मेरी जिम्मेदारी है, इसमें आपको क्या लेना-देना? वैक्सीन मेरे द्वारा लेने पर भी यदि वैक्सीन ना लेने वालों के कारण मुझे संक्रमण हो सकता है, तो वैक्सीन का क्या फायदा?
6. अन्य धर्मीयों के साथ संवाद करके एकता कर लो। यदि एकता ना कर

सबसे बड़ा वैक्सीन निर्माता खुद कह रहा है वैक्सीन का कोई भरोसा नहीं खुद को ही शक है तो आप क्यों भरोसा कर रहे हैं?

वैक्सीन कंपनियों

अदार पूनावाला की अपील सरकार लाए कानून

वैक्सीन कंपनियों पर न दर्ज हो सके केस

• एजेंसी। पुणे.
www.navabharat.news

सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अदार पूनावाला का कहना है कि कोरोनावायरस की वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों को किसी भी तरह के कानूनी पचड़ों से

सरकार बचाए.

पूनावाला ने कहा कि अगर वैक्सीन का किसी पर उलटा या खतरनाक असर हो तो कंपनी की इसके प्रति कोई जवाबदेही नहीं होनी चाहिए. पूनावाला ने यह बात वैक्सीन बनाने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों को लेकर आयोजित एक वर्चुअल पैनल चर्चा के दौरान कही.

सरकार के सामने रखेगी

सको तो भी महाहिंसक वैक्सीन को समर्थन देना बंद करें।

7. W.H.O. की दृष्टि में गद्दार डॉक्टर्स मिल जाये तो उनसे झूंठा वैक्सीन सर्टिफिकेट बनवाकर भी बच सकते हो, इस प्रकार अपने आप को बचा लो।
8. जो भी डॉक्टर्स इत्यादि ऐसा बोले कि 'मैं सबसे पहले वैक्सीन लूंगा, ताकि आपको डर ना लगे' उन्हें हाथ जोड़ कर कह दो कि 'आप खुशी से ले लो, हम पाँच साल पश्चात् लेने का सोचेंगे, अभी नहीं।'
9. यदि कोई कहे कि, वैक्सीन नहीं लेने वाले (सुपर स्प्रेडर) के कारण कोरोना फैलेगा, इसलिए सभी को वैक्सीन अनिवार्य की जाये, तो उन्हें कहो कि यह बात साबित करने के लिए सबूत प्रस्तुत करें।

प्रश्न : कोई भी प्रकार की वैक्सीन ना ली हो, फिर भी निरोगी हो ऐसे परिवार आपके ध्यान में है?

उत्तर : बिल्कुल ..... ऐसे अनेक परिवार आज भी मेरी नजरों के सामने हैं। इतना ही नहीं कि वे लोग आज भी निरोगी है, बल्कि आज भी वे लोग शक्ति संपन्न है। दौड़ने में, कूदने में, खाने-पीने में, सभी प्रकार के कार्यों में वे बच्चे, वैक्सीन लगवाने वाले बच्चों से कई गुना ज्यादा ताकतवर है।

प्रश्न : यदि हमारी इच्छा ना हो, फिर भी दबाव बनाये तो?

उत्तर : आप नव दो ग्यारह हो जाओ, यह एक सरल रास्ता है। यदि बच्चे को स्कूल से निकाल दे तो ऑनलाइन पढ़ाई का रास्ता अब खुल चूका है। 70 प्रतिशत अभिभावक भी यदि वैक्सीन के खिलाफ आ जायेंगे तो स्कूलवालों को यह कहना पड़ेगा कि हमारी स्कूल में वैक्सीन नहीं लगाई जायेगी। दूसरी बात यह है कि शिक्षा से अब रोजगार की कोई गारण्टी ही नहीं है तो बेवजह सर्टिफिकेट के चक्कर में हम हमारे बच्चों का द्रोह क्यों करे?

इस बार की वैक्सीन यदि लग गई तो .....

बंतासिंह शादी में ठूँस-ठूँस कर नान-पराठें खा कर आया। दो-चार दिन के बाद भी जब पेट में ट्रेफिक जाम रहा तो बंतासिंह ईश्वर के मंदिर में जाकर प्रार्थना करने लगा।

हे भगवान्! या नान निकाल दे ...
या जान निकाल दे ....

****

यदि हम समय पर जागृत नहीं हुए तो हमारी भी यही स्थिति हो सकती है, हमें भी प्रार्थना करनी पड़ेगी कि, हे भगवान! या वैक्सीन मेरे शरीर से हटाओ या इस जहाँ से मुझे ही हटाओ .....

चयन आपको करना है - **शाइनींग इंडिया या स्लोटरिंग इंडिया**

मंगल (?) वैक्सीन मिशन भाग-2

Operation Successful But Patient Failed

टीका सुरक्षित ..... मगर मरीज़ असुरक्षित .....

[अंग्रेजी ऑनलाइन मैग्जीन बिश्वास में फरवरी में प्रिन्ट हो रहे इस लेख को धर्मप्रेमी संदेश की विनति एवं विशेष संबंध से अभी जनवरी में ही छपने की अनुमति मिली है। हम वहाँ छपे अंग्रेजी लेख का हिन्दी रूपांतरण यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं साथ में डॉ. बिश्वरूप रॉय जी का बहुत आभार जता रहे हैं। कोई भी पाठक इसे पढ़े बिना ना रहे।] - सं. धर्मप्रेमी

ले. राजेश आर्य ...

अस्पताल में O.T. के बाहर बैठे, मरीज़ के रिश्तेदार चिंतामग्न चेहरे से इंतजार कर रहे थे और जिसका इंतजार था वह घड़ी आ गई।

ऑपरेशन थिएटर से बाहर निकले डॉक्टर को सभी ने घेर लिया और उत्सुकता से पुछने लगे, 'डॉ. साब! ऑपरेशन कैसा रहा?'

डॉ. ने अपनी नाकामयाबी छिपाते हुए सहजता से जवाब दिया, 'ऑपरेशन सफल हुआ, मगर मरीज़ मर गया। Operation successful but patient failed.'

****

4 जनवरी - 2021 के दिन सरकार ने कहा है, 'टीका 110 फीसदी सुरक्षित है।' ['सुरक्षित' का अर्थ क्या समझना चाहिए? और वह भी 110 प्रतिशत!!!]

यानि 100 को टीका लगाने पर 110 मरीज़ की कोरोना से सुरक्षा हो जाएगी या इसका दूसरा अर्थ सोचे तो 'टीका सुरक्षित रहेगा मगर वो टीका लेने वाला सुरक्षित रहेगा कि नहीं रहेगा, वह संदेह के दायरे में है। या तो यह लेख पढ़ने के बाद, जनता टीका नहीं लेगी तो सरकारी गोदामों में टीका सुरक्षित रहेगा।

एक पंखे वाले ने चिल्ला-चिल्लाकर अपने पंखे का विज्ञापन किया 'Life time चलने वाला पंखा ..... Life time चलने वाला पंखा ..... सिर्फ 5 रूपये में .....' अनेक लोगों ने उस पर भरोसा करते हुए वह पंखा खरीद लिया।

4/1/2021 - अमर उजाला

खुशियों का डबल डोज...कोविशील्ड व कोवाक्सिन टीकों पर अंतिम मुहर

सरकार ने कहा-टीका 110 फीसदी सुरक्षित, अभियान की राह साफ

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के खिलाफ देश में सीमित आपात इस्तेमाल के लिए दो टीकों कोविशील्ड और कोवाक्सिन को रविवार को अंतिम मंजूरी मिल गई। भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) ने टीकों को हरी झंडी दिखाते हुए कहा कि ये 110 फीसदी सुरक्षित हैं। इस फैसले से जल्द ही देश में दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान की राह साफ हो गई है।

डीसीजीआई डॉ. वीजी सोमानी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, यदि सुरक्षा संबंधी थोड़ा भी संदेह होता तो हम कभी भी इसे मंजूर नहीं करते। पर्याप्त जांच के बाद ही केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने कोरोना टीकों पर बनी विषय विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर अपनी सहमति दी थी। हल्का बुखार, दर्द और एलर्जी जैसे कुछ दुष्प्रभाव हर टीके के लिए आम बात है। उन्होंने बताया कि कोविशील्ड के अब तक सामने आए परिणामों के अनुसार यह टीका 70.42 फीसदी तक असरदार पाया है।

भारत में बन रहे दोनों टीके

हर भारतीय को गर्व होगा कि जिन दो टीकों को मंजूरी दी गई है, ये भारत में बने हैं। यह आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने वाले हमारे वैज्ञानिक समुदाय के जज्बे को दर्शाता है। मंजूरी मिलने के बाद कोरोना मुक्त राष्ट्र होने का रास्ता साफ हो गया है। यह कोरोना के खिलाफ जंग का निर्णायक मोड़ है। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

टीकों से नुकसान पहुंचने की बात बकवास

डीसीजीआई सोमानी ने बताया कि इन टीकों से लोगों की सेहत को नुकसान पहुंचने की बात बकवास है। उन्होंने कहा, दोनों टीकों की दो-दो खुराक दी जाएगी। इन्हें 2 से 8 डिग्री के तापमान में रखा जा सकेगा। फिलहाल, भारत में कोरोना के छह टीकों का [illegible] जारी है।

70.42% तक असरदार है कोविशील्ड

60% असरदार कोवाक्सिन पहले दो परीक्षणों में

कोविशील्ड को ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका और पुणे के सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा विकसित किया गया है। वहीं, कोवाक्सिन भारत बायोटेक द्वारा भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के सहयोग से विकसित किया जा रहा स्वदेशी टीका है। केंद्र सरकार ने अगले 6 से 8 महीनों में टीकाकरण अभियान के पहले चरण में करीब 30 करोड़ लोगों को टीका देने की योजना बनाई है।

>> संबंधित पेज 02 पर >>

वैक्सीन और विरोध : संपादकीय

किसी ने तो उसे तुरंत ही आजमाया भी सही मगर पंखा टूट गया।

शिकायत करने वालों को पंखे बेचने वाले ने दो टूक उत्तर दिया कि, 'हमने आपकी जिंदगी की गारण्टी नहीं दी थी, पंखे की जिंदगी की बात की थी यानी पंखा जितना टिकेगा, उतनी ही उसकी Life मानी जाएगी और पंखा तो Life time टिका ही है, आप ना समझ पाओ तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ?'

वैक्सीन बेचने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनीयों की दलाल बनकर जिस प्रकार केन्द्र सरकार जोर-शोर से वैक्सीन का प्रचार-प्रसार कर रही है, यह देखकर हमें वह पंखावाला याद आ रहा है, जो शब्द छल से सभी को छल रहा था। सरकार किसानों की हितचिंतक (?) बनकर एक ओर दलालों को निपटा रही है, तो दूसरी ओर खुद ही बड़े-बड़े उद्योगपतियों की दलाल बनने का काम भी कर रही है।

प्र. आप सरकार को क्यों बदनाम कर रहे हो? सरकार तो हमारी भलाई के लिए यह सब कुछ कर रही है ना?

उ. सरकार को सचमुच भलाई में रस होता तो मैं सरकार को नतमस्तक हो जाता मगर ..... अब दाल में काला नहीं, पूरी दाल ही काली दिखने लगी है।

जिस वैक्सीन को 'स्वदेशी-स्वदेशी' कहकर जनता को उल्लु बनाया जा रहा है, क्या हकीकत में वह वैक्सीन स्वदेशी है?

बिल गेट्स की संस्था BMGF (बिल एन्ड मेलिन्दा गेट्स फाउण्डेशन) के द्वारा भारत की सिरम इन्स्टीट्युट को 75 करोड़ डॉलर डोनेशन दिया गया है (सॉरी, उसमें इन्वेस्ट किया गया है।) यहाँ पर बनने वाली वैक्सीन (चाहे वह भारत बायोटेक की हो या सिरम इन्स्टी. की हो), सभी की फोर्म्युला विदेशी कम्पनीयों के द्वारा ही तैयार की गई है। उनमें इस्तेमाल होने वाला FBS (फिटेल बोवाईन सिरम) भी कनाडा और अमरीका की प्राय: 2 करोड़ 40 लाख गर्भवती गायों को काटकर उसके बछड़े में से प्राप्त करके भारत में लाया गया (आयातित) है। भारत में तो सिर्फ उसका थोक उत्पादन (Mass Production) ही किया गया है। मजदूर भारत के लगने मात्र से टीका स्वदेशी नहीं बन जाता है।

भारत राष्ट्र में शुद्ध स्वदेशी टीका बनाने वाली सिर्फ एक ही कंपनी है, जिसका नाम 'शांता बायोटेक्निक्स' है। उस कंपनी के संस्थापक 'के.आई.वाराप्रसाद रेड्डी' खुद कह रहे है कि, 'सभी को पता है कि कोई भी

वैक्सीन इतनी जल्दबाजी में तैयार हो ही नहीं सकती है। टी.बी. की वैक्सीन तैयार होने में 28 साल लग गये थे। इबोला का टीका तैयार करने में 5.5 साल लगे थे। एड्स की बीमारी 40 साल से होने पर भी उसकी वैक्सीन अभी तक बन नहीं पाई है। मुझे डर है कि वैक्सीन निर्माता बड़ा जोखिम उठाने जा रहे हैं। वैक्सीन के बारे में कोई जानकारी भी जनता को नहीं दी जा रही है। हमें जो भी जानकारी मिल रही है, वह प्रिन्ट मिडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया से ही मिल रही है। कोई भी इन्टरनेशनल सायन्टिफिक जर्नल में सच्ची जानकारी प्रसिद्ध नहीं हुई है।'

प्र. सुना है कि सभी स्वास्थ्यकर्मियों (डॉ., नर्स इत्यादि) को टीका लेने में प्राथमिकता दी जा रही है। क्या टीका लेने वाले डॉक्टर्स मुर्ख है?

उ. आपका भ्रम सबसे पहले दूर करने की जरूरत है। कोरोना का वो टीका लेने वाले नहीं है, अपितु सभी स्वास्थ्यकर्मियों को टीका देने जा रहे हैं और इसी कारण से हजारों डॉक्टर्स खुद ही कोरोना का टीका लेने से डर रहे हैं।

हमने अपने पहले लेख में ही बता दिया था कि, बिल गेट्स जनसंख्या नियंत्रित करने और वर्तमान आबादी में से 80 से 100 करोड़ की आबादी को कम करने के लिए कोरोना वैक्सीन लाया है।

मुम्बई के एक अंग्रेजी वर्तमान पत्र ने जब महाराष्ट्र के चोटी के डॉक्टर्स का संपर्क किया तो सर्वे रिपोर्ट चौंकाने वाला निकला।

परेल की गवर्मेन्ट अस्पताल के डीन, हेमंत देशमुख हो चाहे संक्रामक रोग विशेषज्ञ - कोविड-19 टास्क फोर्स ऑफ महाराष्ट्र के डॉ. ओम श्रीवास्तव हो, प्रतिष्ठित बॉम्बे हॉस्पीटल के स्पे. डॉ. गौतम भंसाली हो या पुणे के पब्लिक हेल्थ स्पे. डॉ. अनंत फडके हो, सभी का एक ही सुर है कि 'वैक्सीन अभी लेना जोखिम भरा हो सकता है, क्योंकि वैक्सीन कंपनियाँ इसे जल्दबाजी में लेकर आई है, साथ में ट्रायल के डाटा भी साझा नहीं किया जा रहा है। वैक्सीन से आने वाली साइड इफेक्ट्स के बारे में सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मौन है [या सच्चे समाचार दबाने के प्रयास में है] ऐसी स्थिति में हम टीका लेने में wait and watch की नीति का ही अवलंबन करना चाहते हैं।'

प्र. क्या हकीकत में पारदर्शिता का अभाव है?

उ. जी हाँ, आप को याद होगा, कुछ दिन पहले अमेरिका की एक बड़ी अस्पताल की मुख्य नर्स 'टीफनी डॉवर' को फाईज़र कंपनी का टीका दिया गया था। नर्स की उम्र सिर्फ 32 साल की थी और टीका लेने के महज 17 मिनट के बाद ही टीका की एडवर्टाइज़ (विज्ञापन) करने हेतु एक प्रेस कॉन्फ्रेन्स आयोजित की गई थी।

बड़े-बड़े पत्रकारों को आमंत्रित भी किया गया था मगर चालु प्रेस (पत्रकार) वार्ता में ही टीफनी बेहोश हो गई। कैमरा उस पर से हटा लिया गया। सोशल मीडिया में एक खबर वायरल होने लगी कि, टीफनी मर गई।

सारी टी.वी. चैनल्स (जो कि वैक्सीन कंपनीयों की दलाल थी वो) उस खबर से फैले भ्रम के बचाव में उतर पड़ी। मगर रात को ही उन्हें अपना बयान वापस लेना पड़ा और सभी के सभी मीडिया हाऊस चुप्पी साध बैठे क्योंकि वह नर्स हकीकत में प्रभु को प्यारी हो गई थी। अब तो उसका टेथ सर्टिफिकेट भी जारी हो चुका है।

यह सिर्फ एक किस्सा नहीं है। पोर्टुगल में 41 साल की एक नर्स वैक्सीन लेने के बाद खत्म हो चुकी है और जनआंदोलन के लिए जनता तैयारी कर रही है।

मूर्खता की पराकाष्ठा अब आ

टीका लगने पर कुछ तकलीफ का मतलब शरीर पर हो रहा असर

रही है। भारत के प्रतिष्ठित वर्तमान पत्र वैक्सीन दलाली की सारी हदें पार करते हुए कह रहे हैं कि, 'यदि आप को टीका लगने के बाद कुछ तकलीफ (साईड इफेक्ट्स) का सामना करना पड़ता है तो उसका मतलब शरीर पर टीके का असर हो रहा है।'

यानी उसी टीके को सफल माना जाये जो आपको तकलीफ दें। हद हो गई पागलपन की... जिसने कोरोना टीके को बढ़-चढ़कर लगवाया था। वो हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री श्री अनिल विज को फेफड़े में संक्रमण फैल चुका है। दिल्ली की मेदांता अस्पताल में वह जीवन-मरण के बीच झुला झुल रहे थे मगर मीड़िया ने कितनी चालाकी से इस खबर को दबाकर रखा है, क्योंकि यदि यह खबर फैलने लगी तो वैक्सीन पर से पूरे देश का ही भरोसा उठ जाये। ऐसे तो अनेक दलालों के असीम खेल आपको फरवरी-मार्च में देखने को मिलेंगे।

प्र. मगर, बड़े-बड़े नेता लोग तो वैक्सीन लगाने के साथ-साथ उसे जनता को दिखाने का भी काम करने वाले हैं, उसे कोई नुकसान नहीं होगा क्या?

उ. हकीकत में यदि वे लोग वैक्सीन लगा लेंगे तो खड़ा किया गया साम्राज्य कौन भुगतेगा? आप भ्रम में रह सकते हो, वे लोग नहीं। जो पुरी दुनिया की आबादी को टीका लगाना चाहते हैं वो बिल गेट्स ने कभी भी अपने बेटे-बेटी को टीका लगाया नहीं है। और टी.वी. पर जो सेलिब्रीटीज़ आपको वैक्सीन लगाने की प्रेरणा का विज्ञापन देने आते हैं, उसमें से जिसे पता लग चुका हो वह फर्जी वैक्सीन लगा लेता है या वैक्सीन का फर्जी इंजेक्शन, जिसमें इंजेक्शन की सुई (सीरिंज) उसके शरीर में नहीं जाती है, वापिस इंजेक्शन में ही लौट जाती है।

प्र. आयुर्वेद के शास्त्र में भी तो टीकाकरण की बातें आती है। तो क्या टीकाकरण मूलतः गलत है। दूसरा प्रश्न यह भी है कि यदि टीकाकरण (वैक्सीनेशन) से नुकसान ही होता हो तो पोलियो से भारत देश कैसे मुक्त हुआ? हमें तो आज तक यही बताया गया है कि टीकाकरण के कारण ही भारत में पोलियो खत्म हुआ है।

उ. सबसे पहले वैक्सीनेशन की गेम को समझ लो। कोई भी वायरस कुछ काल तक प्रभावी रहता है, फिर अपने आप कमजोर होने लगता है और जब वह अपने अंत की ओर होता है, तभी वैक्सीन लाई जाती है। जो वायरस स्वतः खत्म होने वाला हो उसे हमने खत्म किया ऐसी झूंठी प्रसिद्धि वैक्सीन बनाने वाली कंपनी के हिस्से में चली जाये तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

वैक्सीनेशन (टीकाकरण) के पश्चात् भी कई सारे वायरस मरते नहीं है। अपना कुछ ना कुछ प्रभाव दिखाते ही हैं, जैसे टी.बी. का बी.सी.जी. का टीका लगाने के बावजूद हर साल भारत देश में साढ़े पाँच लाख लोगों की मौत होती है। (न लगाने पर वे शायद बच जाते) हकीकत यह है कि, वैक्सीनेशन जैसे ही पूर्णरूप से चालु किया जाता है, वैसे ही मैनेज की गई मीडिया में उन वायरस से जनित रोगों की खबरें छपनी बंद हो जाती है। यदि वैक्सीनेशन के कारण ही कोरोना पोज़िटीव आयेगा (क्योंकि RTPCR का तो काम ही यह है) तो बताया जायेगा कि 'हमने पहले

से ही कहा था कि 50-60 प्रतिशत ही सफल है।' यहाँ पर गिनने कौन जायेगा कि, किस-किसको प्रॉब्लम हुई है या फिर वैक्सीनेशन से पैदा होने वाले कोरोना के भयानक स्वरूप को नया नाम दे दिया जायेगा मगर कोरोना तो गायब ही कर दिया जायेगा। जैसे पोलिया मुक्त भारत घोषित कर दिया है, पोलियो होने पर भी।

जानकर आप आश्चर्य करेंगे, कोरोना खत्म होने की दिनांक भी वर्ल्ड बैंक की वेबसाईट पर डिक्लेयर कर दी गई है (शायद यह बात छपने के बाद वेबसाईट पर से यह चीज गायब हो जायेगी।)

सन्-2025 के मार्च तक कोरोना Project Ending Date है, क्योंकि समस्त विश्व की आबादी को तब तक टीका लग चुका होगा।

आज भी हर साल भारत में 50,000 बच्चे पोलियो ग्रस्त हो रहे हैं (अधिकांश वो ही बच्चे पोलियोग्रस्त हो रहे हैं जो उसका टीका लगवा रहे हैं) मगर फिर भी भारत पोलियोमुक्त घोषित कर दिया और अभी जो बच्चा पोलियोग्रस्त हो रहा है, उन्हें अलग रोग का नाम दे दिया है -

आप ही बताईये, यदि भारत पोलियोमुक्त हो चुका है, तो पोलियो की वैक्सीन लगाने की जरूरत ही क्यों है? 2004 से अभी तक पोलियो का टीका लग रहा है, हर बच्चे को .....

गुजरात के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री संजय भाई वोरा से प्राप्त जानकारी के मुताबिक पिछले 12 साल से कोई भी नई एंटीबायोटीक दवाई की खोज नहीं हुई है और उससे पूर्व खोजी गई एंटीबायोटीक दवाई अब रोगों पर बेअसर होने लगी है। जिसके कारण फार्मा कंपनियाँ वैक्सीन के व्यापार में कूद पड़ी है।

वैसे भी दवाई का बाजार सीमित है, वैक्सीन का असीम। क्योंकि, दवाई बीमार को दी जाती है और वैक्सीन तंदरूस्त एवं बीमार सभी को।

कोरोना वैक्सीन का मार्केट तो 700 करोड़ आबादी का बताया जा रहा है, जो कि सबसे बड़ा है। सभी उम्र वाले को इसमें शामिल करने की योजना है और उसका असली कारण सभी के स्वास्थ्य की चिंता नहीं है, सभी को अपना गुलाम बनाने की मशक्कत है। जिसका हम भविष्य में पर्दाफाश करेंगे।

अब बात करते हैं, आयुर्वेद शास्त्रों की, तो बता दें कि आयुर्वेद के एक भी अधिकृत ग्रंथ में टीकाकरण की बात आती नहीं है। इस टीके का उल्लेख गुजरात के गोंडलनरेश भगवद्सिंहजी गोहिल ने अंग्रेजों के शासनकाल में बनाये भगवद्गोमंडल शब्दकोष में किया है। बंगाल राज्य के कुछ चरवाहे गाय के चेचक में से मवाद इत्यादि निकालकर रोग ग्रस्त (चेचक के रोगी) को देते थे और वह भी मुख से लेने वाली औषधी के रूप में, ना कि इंजेक्शन की तर्ज पर.....।

बच्चों की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु दिए जा रहे औषध को स्वर्णप्राशन के रूप में जाना जाता है।

उन्हें गलती से भी कोई आज के टीकाकरण के साथ जोड़ने का दुःसाहस ना करे। आज जिस प्रकार बच्चों को टीका दिया जाता है, उन टीकाओं को बनाने की विधि यदि कोई देख ले तो कभी भी अपने बच्चे को वह टीका नहीं देगा। महाहिंसा, अतिशय अशुचिमय पदार्थ और अत्यंत हानिकारक धातु एवं केमिकल्स से बने टीके एक प्रकार का ज़हर है। यदि कोई व्यक्ति ऐसे टीके को देने की सिफारिश करता है तो हम उन्हें इन्सान का दर्जा भी देने से दूर रहते हैं।

प्र. स्वास्थ्य के लिए तो यह सब करने की इजाजत हैं ना? और सुना है कि छोटी उम्र से ही बच्चा यदि थोड़ा-थोड़ा ज़हर लेता रहता है तो बड़ा होने के बाद उस पर ज़हर की असर नहीं होती है। पूर्वकाल में राजा-महाराजा की संतान को दुश्मनों के द्वारा संभावित विषप्रयोग से बचाने के लिए भोजन में अल्प मात्रा में ज़हर देने की परिपाटी रही है। वैक्सीनेशन भी इसी तर्ज पे मान लिया जाये तो?

उ. (1) वैद्यराज के द्वारा नब्ज परीक्षण के पश्चात् दिया गया हो।

(2) ज़हर यदि अत्यन्त अल्प मात्रा में हो साथ में औषधि से परिष्कृत हो तो दवाई का काम कर सकता है, मगर ..... बिना लक्षण देखे, सभी को, एक समान मात्रा में मशीन की तरह वैक्सीन का ज़हर देना कितना उचित है?

सभी की रोग प्रतिरोधक क्षमता समान न होने के कारण वैक्सीनेशन के समान डोज़ दिए जाने पर कई बच्चे आजीवन विकलांग हो जाते हैं, या नये-नये रोगों के शिकार हो जाते हैं यावत् मर भी जाते हैं।

पुणे में MMR (रूबेला) का टीका लेने पर एक बच्चे की मौत हुई थी

ऐसा पोस्टमार्टम रिपोर्ट अभी-अभी आया है।

राजकुमार जैसे अतिविशिष्ट लोगों को दुश्मनों के विष प्रयोग से बचाने के लिए Rarest ot the rare case (अति आपवादिक परिस्थिति) में अति निपुण वैद्य के द्वारा की गई ज़हर चिकित्सा सभी के लिए लागु करना कितना उचित है?

प्र. मगर सरकार सभी को देने वाली नहीं है। सरकार ने इसे मेन्डेटरी (अनिवार्य) किया भी नहीं है, फिर किस बात की चिंता?

उ. सभी को नहीं देने वाली है, यह कहने से भी बेहतर यह होगा कि सभी को दे भी नहीं पायेगी, क्योंकि कुछ मेरे जैसे और आपके जैसे लोग इससे बचने के पूरे प्रयास करेंगे। फिर भी हवाईजहाज की यात्रा, स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई, एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रवास इत्यादि के लिए वैक्सीन सर्टीफिकेट अनिवार्य किया जाएगा तो आप क्या कर पायेंगे? सरकार को पुछो, वैक्सीन सर्टीफिकेट की क्या जरूरत है?

प्र. वैक्सीनेशन ज़हर जैसा कार्य करती है, ऐसा आप किस आधार पर कहते हो?

1. ब्रिटेन इत्यादि में वैक्सीन -70 डिग्री में रखी जाती है। बॉडी टेम्प्रेचर से 10/15 डिग्री का फर्क हो ऐसी खाद्य/पेय सामग्री शरीर के लिए स्वीकार्य बनती है मगर जो खाद्य या पेय पदार्थ शरीर के तापमान से अति ठंडा या अति गर्म हो, वह ज़हर का कार्य कर सकता है और यह हकीकत वैक्सीन ट्रायल के दौरान सामने आ चुकी है। कई वोलिन्टर्स को बुखार, हड्डी में कंपन, चक्कर आना, बेहोश होना, मृत्यु पाना इत्यादि दुष्परिणाम भुगतने पड़े हैं।
2. कोई भी मांसाहारी इन्सान भी शाकाहारी प्राणी का ही मांस खायेगा। यदि वह मांसाहारी प्राणी के किसी भी अंग को खाता है तो उन्हें कई सारे रोगों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि मांसाहारी प्राणी में एसिड़ की मात्रा अत्यधिक होती है। कुछ वैक्सीन में शार्क मछली के लीवर का ऑईल भी डाला गया है। शार्क मछली समंदर की हिंसक और शिकारी मछली है। सामान्यत: मांस खाना भी इंसान जैसों को आरोग्यप्रद नहीं है, फिर भी मांसाहारी इंसान भी जिसे न खाता हो ऐसे मांसाहारी प्राणियों का अवशेष मिलाई हुई वैक्सीन आरोग्य कैसे दे सकती है?
3. कई सारी वैक्सीन में मनुष्य भ्रूण का प्रयोग हो रहा है, जो कि आपके DNA change करने के द्वारा आप में ऑटो इम्युन रोगों को पैदा करने में समर्थ है, जिसके कारण वैक्सीन लेने के पश्चात् आप सामान्य रोगों को (सिरदर्द, बुखार-जुकाम जैसे को) मिटाने में भी कामयाब नहीं हो पायेंगे, क्योंकि आम बुखार और वैक्सीन के बाद आने वाले खास बुखार में बस यही फर्क रहेगा। आम बुखार आप को बिना किसी दवाई भी उतर जाता था मगर वैक्सीन लेने के बाद आये छोटे-छोटे बुखार जैसे रोग भी खास बन जायेंगे, जिसे दूर करने के लिए आपको अंततः एलोपैथी की शरण में जाना पड़ेगा (हालांकि, उसके पास भी इसका इलाज नहीं होगा)
4. वैक्सीन को लंबे अरसे तक टिकाये रखने के लिए उनमें प्रिजर्वेटीव के तौर पर जो भी केमिकल्स डाले जाते हैं, उनका सीधा संबंध कैन्सर के साथ है। कैन्सर होने के मुख्य कारण में

चिंता • करोड़ों लोगों को कोरोना वैक्सीन कैसे मिलेगी, इस पर विशेषज्ञों में मंथन शुरू

500 चीजों से मिलकर बनेगी वैक्सीन इसमें शार्क के लिवर का तेल भी

वैक्सीन बनाने के लिए जरूरी तत्वों की वैश्विक उपलब्धता का संकट है

इंडी | तंत्र

कोविड-19 महामारी को काबू करने के लिए दुनिया भर में वैक्सीन पर शोध किया जा रहा है। हाल ही में दवा कंपनी मॉडर्ना ने घोषणा की कि उसने वैक्सीन तैयार कर ली है, जो 94.5% तक वायरस को खत्म करने में कारगर है। यही बीते हफ्ते दवा कंपनी फाइजर ने भी वैक्सीन तैयार करने की जानकारी दी थी। लेकिन

तेल के लिए ज्यादा शार्क मारी जाएंगी, पहले ही कम

वैक्सीन के लिए जरूरी तत्वों में से एक शार्क के लिवर में मिलने वाला तेल है, जो अभी फ्लू की वैक्सीन में इस्तेमाल होता है। कन्जर्वेशन ग्रुप चाहते हैं कि वैक्सीन के लिए स्क्वालेन कम से कम शार्क की डिमांड बढ़ेगी और इन्हें ज्यादा मारा जाएगा।

गिने जाने वाले पदार्थ वैक्सीन में बैठे हुए है।

5. वैद्यराज ने दी हुई दवाई भी अलग-अलग इंसान के लिए अलग-अलग मात्रा में होती है, वरना दवाई भी जहर का काम कर सकती है। यहाँ पर तो वैक्सीन सभी को एक ही मात्रा में दी जा रही है।

6. कौन पागल ऐसा होगा कि बिना जाँच की गई दवाई को अपने उपर प्रयोग करने की अनुमति दे।

फाईज़र की वैक्सीन का तो भारत देश की प्रजा पर ट्रायल भी नहीं हुआ है और उसे सीधी ही अनुमति मिलने जा रही है।

कोवैक्सीन एवं कोविशिल्ड के भी दो ट्रायल ही हुए है, तीसरे ट्रायल की बारी भी आनी बाकी है और सीधी अनुमति मिल रही है। दो ट्रायल के पूरे डाटा भी प्रकाशित नहीं किये गये हैं।

सबसे अहम बात यही है कि जो खुद डिपोप्युलेशन का समर्थक रह चुका है वह बिल गेट्स को वर्तमान आबादी को बचाने में इतना रस क्यों है?

श्री संजय भाई वोरा तो आगे की एक और बात बताते हैं। हमारे भारत देश में किसी भी टीके को अनुमति देनी हो तब ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक्स एक्ट-1945 के आधार पर बनाई गई नियमावलि का अवलंबन लिया जाता है। इस कानून में कोई भी टीके की आपातकालीन परिस्थिति में (ट्रायल के परिणाम प्रदर्शित किए बिना) बिक्री की अनुमति देने का प्रावधान नहीं है। अमेरिका में ट्रायल के परिणाम बताये बिना भी टीकाकरण की आपातकालीन अनुमति मिल जाये ऐसा कानून है।

तो फिर भारत देश में किस आधार पर फाइज़र इत्यादि टीकाकरण की जल्दी-जल्दी अनुमति मिल गई है? इसका जवाब चौंकाने वाला है। सन्-1945 के कानून में एक धारा और जोड़ दी गई है, जिसका निष्कर्ष यह है कि, **किसी दवाई को विदेश में यदि उपयोग करने की अनुमति दी गई हो तो भारत देश में उसी दवाई को बिना किसी ट्रायल के भी अनुमति दे सकते हैं।**

इस आधार पर विदेश के फाईज़र टीके को सीधी अनुमति मिल गई है।

यह मेरा आकलन समझना हो तो आकलन और भविष्यवाणी समझनी हो तो भविष्यवाणी .....

1. जल्दबाजी में लाये गये इस टीके को देखकर भी।
2. ट्रायल के डाटा छुपाने के बाद किये जा रहे टीकाकरण को जानकर भी।
3. लगातार घट रहे कोरोना के केसेज़ होने पर भी और लोगों में हर्ड इम्युनिटी बढ़ने के कारण कोरोना की जंग प्राय: जीत जाने पर भी।
4. कई विशेषज्ञों के द्वारा चेतावनी देने पर भी, और यह सभी पहलू जानकर भी अनजान बनी यह सरकार टीकाकरण जारी रखेगी तो .....

सन् 2021, फरवरी और मार्च महिने में असली महामारी शुरू हो जाएगी .....

जो कोरोना के कारण नहीं, कोरोना के टीके के कारण होगी ....

जिसमें टीके बनाने वाली कंपनियाँ तो मालामाल होगी मगर जनता पायमाल .....

Portuguese health worker, 41, dies two days after getting the Pfizer covid vaccine as her father says he 'wants answers'

By Natalia Penza For The Mailonline
Updated at 3:52 pm on 4 January 2021

9 shares 71 comments

- **Sonia Acevedo suffered a 'sudden death' on New Year's Day 48 hours after jab**